आज नीरोग रहना बड़ी बात है

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

शुद्ध भोजन नहीं मिल रहा आजकल, ज़िन्द गी में बढ़ी घात पर घात है।

दोष ही दोष बढ़ने लगे रक्त में, आज नीरोग रहना बड़ी बात है।।

है धुआँ ही धुआँ वायु दूषित हुई,

बाग बीमार हैं पुष्प खिलते नहीं।

योग होता नहीं रोग जाता नहीं,

वक्त पर वैद्य तक आज मिलते नहीं।।

साँस पर घोर संकट हजारों खड़े, मौत से प्राण की नित मुलाकात है

दोष ही दोष बढ़ने लगे रक्त में, आज नीरोग रहना बड़ी बात है।।

नीर निर्मल नहीं, क्षीर है ही नहीं, क्या लिखा है युवाओं की तकदीर में।

देखने को मिलेगी हमें खेलते, बाल वीरों की तस्वीर तस्वीर में।।

बात बूढ़ों की तुमको बताऊँ तो क्या, यह समझ लो कि दुक्खों की बरसात है।।

दोष ही दोष बढ़ने लगे रक्त में, आज नीरोग रहना बड़ी बात है।।

हैं जरूरी बहुत औषधालय बढ़ें, हो चिकित्सा सदा वैद्य मिलते रहें।

आँख की रोशनी जीभ नाड़ी उदर, देख कर रोग को दूर करते रहें।।

रोग जड़ से मिटातीं जड़ी बूटियाँ,

जंगलों की जगत को ये सौगात है।।

दोष ही दोष बढ़ने लगे रक्त में, आज नीरोग रहना बड़ी बात है।।

जलता हुआ दीप हूँ

मेरे नीचे छिपे अँधेरों , से मेरा सम्बन्ध नहीं कुछ,

जलता हुआ दीप हूँ मैंने , जग को उजियारे बाँटे हैं ।।

मुझे सताते रहे अँधेरे , जलता हुआ देख धरनी पर ।

कितने ही आरोप लगाए , दुनिया ने मेरी कथनी पर।।

तुम ही नहीं हवा आँधी ने पल पल बुरी तरह झकझोरा ,

सब कुछ सहता रहा रात भर,फिर भी अडिग रहा करनी पर।।

मेरे नीचे छिपे तमस को तुम जो समझ रहे हो समझो ,

सम्मुख आने पर मैंने तो, दम भर अँधियारे छाँटे हैं।।

मेरे नीचे छिपे अँधेरों , से मेरा सम्बन्ध नहीं कुछ,

जलता हुआ दीप हूँ मैंने , जग को उजियारे बाँटे हैं ।।

मेरी ज्योति शिखा हिलते ही सब समझे भयभीत हो गया ।

तनिक लहर क्या गया अरे तुम समझे कालातीत हो गया।।

जब तक तेल देह में बाकी बाती का सम्बन्ध रहेगा,

तब तक मेरी दम में दम है यही गीत संगीत हो गया।।

किरच किरच हो जाने वाले फानूसों के बेटो ! सुन लो

सच की कतरन तक के आगे नौकीले काँटे हारे हैं।।

मेरे नीचे छिपे अँधेरों , से मेरा सम्बन्ध नहीं कुछ,

जलता हुआ दीप हूँ मैंने , जग को उजियारे बाँटे हैं ।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"